CBSE 10A KRITIKA TEXT LESSON No.2 जॉर्ज पंचम की नाक

QUESTION AND ANSWERS

प्रश्न 1. सरकारी तंत्र में जॉर्ज पंचम की नाक लगाने को लेकर जो चिन्ता या बदहवासी disgraceful दिखाई देती है वह उनकी किस मानसिकता mentality को दर्शाती है?

उत्तर : सरकारी तंत्र में जॉर्ज पंचम की नाक लगाने को लेकर जो चिंता और बदहवासी(disgraceful) दिखाई देती है, उससे उनकी गुलाम मानसिकता(mentality) का बोध होता है। इससे पता चलता है कि वे आज़ाद होकर भी अंग्रेजों के गुलाम हैं। उन्हें अपने उस अतिथि की नाक बहुत मूल्यवान प्रतीत होती है जिसने भारत को गुलाम बनाया और अपमानित(insulted) किया। वे नहीं चाहते कि वे जॉर्ज पंचम जैसे लोगों के कारनामों (misdeeds)को उजागर करके अपनी नाराजगी(anger) प्रकट करें। वे उन्हें अब भी सम्मान(respect) देकर अपनी गुलामी पर मोहर लगाए रखना चाहते हैं।

Brainbox learn easy

इससे यह स्पष्ट होता है कि स्वतंत्र होने पर भी परतंत्रता(slavery) की आदत या चाटुकारिता(false praise) की आदत अभी समाप्त नहीं हुई है। सरकारी तंत्र अपनी मर्यादा को पीछे रखकर उस जॉर्ज नामक व्यक्ति के नाक के लिए चिन्तित है जिसका कोई महत्व नहीं है। इस तरह की सरकारी तंत्र अयोग्यता, अदूरदर्शिता, मूर्खता, चाटुकारिता को दर्शाती है।

प्रश्न 2. रानी एलिजाबेथ के दरजी की परेशानी का क्या कारण था? उसकी परेशानी को आप किस तरह तर्कसंगत ठहराएंगे?

उत्तर : रानी एलिज़ाबेथ का दरज़ी रानी के दौरे से अच्छी तरह परिचित था। दर्जी जानता था कि रानी पाकिस्तान, भारत और नेपाल का दौरा करेंगी, तो उस देश के अनुकूल ही उन्हें वेश धारण करना होगा। दरज़ी परेशान था कि

कौन-कौन से देश में कैसा पोशाक पहनेगी? इस बात पर दरज़ी को, कोई जानकारी नहीं थी, न कोई निर्देश directions था।

उसकी चिन्ता अवश्य ही विचारणीय थी। प्रशंसा की कामना हर व्यक्ति को होती है। उसका सोचना था जितना अच्छा वस्त्र होगा उतनी ही मेरी ख्याति होगी। वह यह भी अच्छी तरह जानता था कि रानी से जुड़े सभी समाचार अखबार में छपता है। जब रानी के कुत्तों तक की खबरें छप रही हैं, तो रानी की इच्छा के अनुकूल ड्रेस सिलने पर मेरी ख्याति हो जाएगी। इस तरह उसकी चिन्ता उचित ही थी।

प्रश्न 3. "और देखते ही देखते नई दिल्ली की काया पलट होने लगी।" नई दिल्ली के कायापलट के लिए क्या-क्या प्रयत्न किए गए होंगे?

उत्तर : नई दिल्ली के कायापलट(changes) के लिए सबसे पहले गंदगी(dirt) के ढेरों को हटाया गया होगा। सड़कों, सरकारी इमारतों और पर्यटन-स्थलों को रंगा-पोता और सजाया-सँवारा गया होगा। उन पर बिजलियों का प्रकाश किया गया होगा। सदा से बंद पड़े फव्वारे चलाए गए होंगे। भीड़भाड़ वाली जगहों पर ट्रैफिक पुलिस का विशेष प्रबंध किया गया होगा।

Brainbox learn easy

प्रश्न 4. आज की पत्रकारिता में चर्चित हस्तियों के पहनावे और खान-पान सम्बन्धी आदतों आदि के वर्णन का दौर चलपड़ा है –

(क) इस प्रकार की पत्रकारिता के बारे में आपके क्या विचार हैं?

(ख) इस तरह की पत्रकारिता आम जनता विशेषकर युवा पीढ़ी पर क्या प्रभाव डालती है?

(क)आज की पत्रकारिता में चर्चित हस्तियों के पहनावे, खान-पान संबंधी आदतों को व्यर्थ ही वर्णन करने का दौर चल पड़ा

है, इससे जन-सामान्य की आदतों में भी परिवर्तन आ गया है। इस प्रकार की पत्रकारिता के प्रति मेरे विचार हैं कि-

1. इस तरह की बातों को इकट्ठा करना और बार-बार दोहराकर(repeat)महत्त्वपूर्ण बना देना पत्रकारिता का प्रशंसनीय कार्य नहीं है।

2. पत्रकारिता में ऐसे व्यक्तियों के चरित्र को भी महत्त्व दे दिया जाता है, जो अपने चरित्र पर तो कभी खरे उतरते नहीं हैं पर चर्चा में बने रहने के कारण असहज कार्य करते हैं जो पत्रों में छा जाते हैं।

(ख) चर्चित व्यक्तियों की पुनः-पुनः की व्यर्थ-चर्चाएँ युवा पीढ़ी पर बुरा प्रभाव डालती हैं। उन चर्चित व्यक्तियों की नकल करने का प्रयास, उन्हीं की संस्कृति में जीने की बढ़ती हुई इच्छाएँ युवा पीढ़ी के मन में बलवती रूप धारण कर लेती हैं। जिससे उनके ऊपर दुष्प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता है। सामाजिक व्यवहार (social behaviour) और लक्ष्य (goal) को भूल व्यर्थ की सजावट में समय और धन खर्च करने लगती है।

Brainbox learn easy

प्रश्न 5. जार्ज पंचम की लाट की नाक को पुनः लगाने के लिए मूर्तिकार ने क्या-क्या यत्न किए?

उत्तर : जार्ज पंचम की नाक को फिर से लगाने के लिए जो सराहनीय प्रयास किए गए वे सब निश्चित ही हैरान करने वाले कार्य थे जो इस प्रकार हैं-

1. मूर्तिकार ने फाइलें ढूंढवाईं, जिससे इस पत्थर के स्थान का पता चल सके।

2. फाइल के न मिलने पर मूर्तिकार उस तरह का पत्थर ढूँढ़ने के लिए हिन्दुस्तान के हर पहाड़ पर गया। उसने हिन्दुस्तान का कोना कोना खोजा।
3. मूर्तिकार ने अपने देश में स्थित सभी नेताओं के मूर्तियों की नाक को नापा(measure)। जिसके लिए वह देश के उन सब नेताओं की मूर्तियों को ढूँढ़ते-ढूँढते साथ में नाक को नापते-नापते देश के हर एक प्रदेश में गया।
4. बिहार के सेक्रेटरिएट के सामने सन् बयालीस में शहीद(martyr) हुए बच्चों की स्थापित मूर्तियों की नाक को नापा, परन्तु सभी नाकें बड़ी निकलीं।
5. अन्त में देश के किसी जिन्दा व्यक्ति की जिन्दा नाक लगाने का प्रयत्न किया गया और यह प्रयत्न सफल भी रहा, अन्त में जिंदा व्यक्ति की नाक लगा दी गई।

प्रश्न 6. प्रस्तुत कहानी में जगह-जगह कुछ ऐसे कथन आए हैं जो मौजूदा व्यवस्था पर करारी चोट करते हैं। उदाहरण के जिन्दा नाक लगा दी गई। लिए- "फाइलें सब कुछ हजम कर चुकी हैं।" सब हुक्कामों ने एक दूसरे की तरफ ताका। पाठ में आए ऐसे अन्य कथन छाँटकर लिखिए।

Brainbox learn easy

उत्तर : पाठ में आए ऐसे व्यंग्यात्मक घटनाएं वर्तमान व्यवस्था पर चोट करते हैं-

1. इंग्लैंड के अखबारों की जो कतरनें होती थी वह हिन्दुस्तानी अखबारों में दूसरे दिन चिपकी नजर आती थीं जिसमें लिखा था कि रानी ने हल्के नीले रंग का सूट बनवाया है।
2. शंख पूरे इंग्लैण्ड में बज रहा था, गूंज हमारे पूरे हिन्दुस्तान में आ रही थी।
3. सड़के जवान हो गईं, बुढ़ापे की धूल साफ हो गई। इमारतों ने नाजनीनों की तरह शृंगार किया...। सब चमक उठीं।
4. दिल्ली में सब था... सिर्फ जॉर्ज पंचम की लाट पर नाक नहीं थी।
5. पहरेदार गश्त लगते रहे और लाट की नाक चली गई।
6. देश के खैर ख्वाहों की मीटिंग बुलाई गई।
7. अगर यह नाक नहीं है तो हमारी भी नाक नहीं रह जाएगी।

8. पुरातत्व विभाग की सभी फाइलों के पेट चीरे गए, परन्तु कुछ भी पता नहीं चला।

प्रश्न 7. नाक मान-सम्मान व प्रतिष्ठा का द्योतक है। यह बात पूरी व्यंग्य रचना में किस तरह उभर कर आई है? लिखिए।

उत्तर : इस पाठ में नाक मान-सम्मान और प्रतिष्ठा की परिचायक है। जॉर्ज पंचम भारत पर विदेशी शासन के प्रतीक हैं। उनकी कटी हुई नाक उनके अपमान की प्रतीक है। इसका अर्थ है कि आज़ाद भारत में जॉर्ज पंचम की नीतियों को भारतविरोधी मानकर अस्वीकार कर दिया गया।
रानी एलिजाबेथ के आगमन से सभी सरकारी अधिकारी अंग्रेज़ी शासन के विरुद्ध अपनी नाराजगी व्यक्त करने की बजाय उनकी आराधना में जुट गए। जॉर्ज पंचम का भारत की धरती से कोई अनुराग नहीं था। उनकी आस्था पूरी तरह विदेशी थी। उनकी मूर्ति का पत्थर तक विदेशी था। फिर उनका मान-सम्मान किसी भारतीय नेता या बलिदानी बच्चों से भी अधिक नहीं था। उनकी नाक भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों की नाक से नीची थी। इसके बावजूद सरकारी अधिकारी उसकी नाक बचाने में लगे रहे। लाखों-करोड़ों रुपया बर्बाद कर दिया। यहाँ तक कि अंत में किसी जीवित व्यक्ति की नाक काटकर जॉर्ज पंचम की नाक पर बिठा दी गई। यह पूरी भारतीय जनता के आत्मसम्मान पर चोट है। |

Brainbox learn easy

प्रश्न 8. जॉर्ज पंचम की लाट पर किसी भी भारतीय नेता, यहाँ तक कि भारतीय बच्चे की नाक फिट न होने की बात सेलेखक किस ओर संकेत करना चाहता है।

उत्तर : जॉर्ज पंचम की मूर्ति पर किसी भी भारतीय नेताओं, यहाँ तक कि बिहार के सेक्रेटरिएट के सामने सन् बयालिस में शहीद हुए भारतीय बच्चे की नाक फिट न होने की बात से लेखक का संकेत है कि जिस जॉर्ज पंचम

की नाक के लिए सरकारी तन्त्र के सभी हुक्काम चिन्तित थे। उसकी नाक तो अपने देश के महापुरुषों की बात तो दूर, देश के लिए शहीद हुए बच्चों की नाक से भी छोटी थी जिसके लिए इतना तहलका मचा रखा था। इस तरह जॉर्ज पंचम की गणना गोखले, तिलक, शिवाजी, गाँधी, पटेल, बोस की तुलना में नगण्य थी।

प्रश्न 9. अखबारों ने जिन्दा नाक लगने की खबर को किस तरह से प्रस्तुत किया?

उत्तर : अखबारों ने जॉर्ज पंचम की नाक की जगह जिंदा नाक लगाने की खबर को बड़ी कुशलता से छिपा लिया। उन्होंने बस इतना ही छापा-'नाक का मसला हल हो गया है। राजपथ पर इंडिया गेट के पास वाली जॉर्ज पंचम की लाट के नाक लग रही है। इस तरह जिन्दा नाक लगाने की खबर को शब्दों के ताल-मेल में वाक्पटुता से छिपा लिया गया।

Brainbox
learn easy

प्रश्न 10. "नई दिल्ली में सब था... सिर्फ नाक नहीं थी।" इस कथन के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है ?

उत्तर : नई दिल्ली में सब था, सिर्फ नाक नहीं थी-यह वाक्य कहकर लेखक यह स्पष्ट कराना चाहता है कि भारत के स्वतन्त्र होने पर वह सर्वथा सम्पन्न हो चुका था, कहीं भी विपन्नता(distress) नहीं थी। अभाव था तो केवल आत्मसम्मान का, स्वाभिमान का। सम्पन्न होने पर भी देश परतन्त्रता की मानसिकता से मुक्त नहीं हो सका है। अंग्रेज का नाम आते ही हीनता का भाव उत्पन्न होता था कि ये हमारे राजा (शासक) रहे हैं। गुलामी का कलंक पीछा नहीं छोड़ रहा है। इसलिए लेखक कहता है कि दिल्ली में सिर्फ नाक नहीं थी।

प्रश्न 11. जॉर्ज पंचम की नाक लगने वाली खबर के दिन अखबार चुप क्यों थे?

उत्तर : उस दिन सभी अखबार इसलिए चुप थे क्योंकि भारत में न तो कहीं कोई अभिनंदन कार्यक्रम हुआ, न सम्मान-पत्र भेंट

करने का आयोजन हुआ। न ही किसी नेता ने कोई उद्घाटन किया, न कोई फीता काटा गया, न सार्वजनिक सभा हुई। इसलिए अखबारों को चुप रहना पड़ा। यहाँ तक कि हवाई अड्डे या स्टेशन पर स्वागत समारोह भी नहीं हुआ। इसलिए किसी नेता का ताजा चित्र नहीं छप सका।

******